आत्मा की क्वालिटी जानना और उसे जाग्रत करना ही परम लक्ष्य : दादी रत्न मोहिनी जी

(रपट : बी.के.गिरीश, ज्ञानसरोवर।)

ज्ञानसरोवर,आबू पर्वत, २५ मई २०१३। आज ज्ञानसरोवर के हार्मनी हॉल में वर्तमान समय महिलाओं की भूमिका विषय पर एक सम्मेलन एवं चिंतन शिविर का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में देश के विभिन्न प्रांतों से बड़ी संख्या में महिलाओं ने हिस्सा लिया। सम्मेलन का आयोजन ब्रह्माकुमारीज एंव महिला सेवा प्रभाग (आर. ई. आर. एफ. की एक शाखा) ने संयुक्त तत्वावधान में संपन्न किया । मंचासीन सभी विदुषियों ने दीप प्रज्वलित करके सम्मेलन का उद्घाटन किया।

ब्रह्माकुमारीज की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी जी ने अपने आर्शीवचन इन शब्दों में दिये। उन्होंने कहा कि आज के संसार में हर तरफ अनेक भौतिक सुख है मगर जितने भौतिक साधन बढ़ते जाएंगे उतना ही हम उसमें फंसते भी जाएंगे। मानव जीवन की वास्तविकता क्या है? यह अमूल्य है। मगर प्रश्न है कि यह किस आधर पर? शरीर को चलाने वाली मूल शक्ति कौन है? उसको पहचान कर अगर हम उसके आधार पर चलते रहेंगे तो चाहे दुनियाँ कैसी भी हो हम सदा शांति प्रेम और आनंद का अनुभव करते रहेंगे। जीवन का जो मूल फाउंडेशन है वह इन ऑखों से दिखलाई नहीं देता है। वह अदृश्य है। वह आत्मा है। हमारे यहाँ जीवन का मूल आधार आत्मा को ही माना जाता है। आत्मा की क्वालिटी जानना और उसे जाग्रत करना ही हमारा परम उद्देश्य होना चाहिए। जीवन की हर प्रकार की ऊंच नीच को जानते हुए भी आत्मा के ज्ञान के आधार पर हम सदा सुखी शांत रह सकेंगे। सांसारिक भौतिकता को प्राप्त करना भी आवश्यक है मगर उसमें डूब जाना अनुचित है। परमात्मा शिव बाबा भी अदृश्य हैं। उनको जानना और उनसे खुद को युक्त करना ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए। ईश्वरीय शक्ति के आधार से हम संस्कारित बनेंगे और अपने परिवार को भी संस्कारित कर लेंगे। तभी इस धरा पर स्वर्ग का अवतरण होगा। सत्य पर चलकर ही सत्य दुनियाँ का आविर्भाव होगा।

महिल सेवा प्रभाग की अध्यक्षा एवं सम्मेलन की मुख्य वक्ता राजयोगिनी चक्रधारी बहन ने आज के समय में नारी की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि आज दुनियाँ नकारात्मकताओं से भरी हुआ है। दुनियाँ में श्रेष्ठ साधनों की कमी नहीं है। हर प्रकार का ऐश्वर्य है मगर जीवन में जिस सुख और शांति का अनुभव होना चाहिए वह उनके पास नहीं है। सुख और शांति की अनुभूति के लिए एक बार फिर से आध्यात्मिकता की ओर ही निहारना पड़ता है। प्रतियोगिता की भावना ने लोगों की खुशी को लील लिया है। इस भाव से निकल कर अपनी स्थिति में खुश रहने की शिक्षा आध्यात्मिकता सिखलाती है। सामाजिक परिवर्तन से भी इसमें सुधार आ पाएगा। परिवर्तन अपने आचरण में लाने की आवश्यकता है। आचरण में सुधार लाने के लिए एक बार फिर से स्वयं को अपने पिता परमात्मा को जानने की आवश्यकता है। स्वयं को मूल आत्मा रूप में समझने और महसूस करने से हमारी वृत्ति में परिवर्तन आता जाता है और तभी आचरण में सुधार आता है। इससे जीवन में सुख और शांति आने लगती है। आज की माताएं बच्चों को ऊंची शिक्षा प्रदान करना चाहती हैं मगर उनके आचरण और चरित्र के निर्माण की ओर उनका ध्यान उतना नहीं जाता है। यह घातक है। चरित्र का निर्माण

नहीं होने से व्यक्ति ऊंचे पदों पर रहकर भी पतन की ओर चला जाएगा। आज हमारे समाज में यह दिखलाई भी पड़ रहा है। नैतिकता को ऊंचाई पर ले कर जाने वाली शिक्षा ही वास्तविक शिक्षा है। जब माताओं का हृदय विश्व के लिए वात्सल्य से भरेगा तो जग का कल्याण होने लगेगा। भारतीय महिलाएं ऐसा करने में पूर्णतः सक्षम हैं। शर्त यह है कि वे देह की दुनियाँ से बाहर निकल कर यह समझें की देह तो मात्र चोला है और इसको धारण करने वाली वह एक अमर आत्मा है। इसी में विजय निहित है।

पंजाब केसरी समाचार पत्र समूह की निदेशक एवं अनेक राष्ट्रीय तथा अंतराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित बहन श्रीमती किरण चोपड़ा जी ने विशिष्ठ अतिथि के रूप में अपने उद्गार प्रकट किये। उन्होंने कहा कि ऐसे आध्यात्मिक मंच पर खुद को पाकर मैं गौरवान्वित महसूस कर रही हूँ। हम सभी को सुख व शांति की तलाश है। मंगल ग्रह पर तो हम जा पहुँचे मगर जीवन में मंगल तलाशने की आवश्यकता है। सांसारिक पढ़ाई के लिए अनेक उत्तम विश्वविद्यालय हैं मगर सुख शांति की शिक्षा इसी विश्वविद्यालय में प्राप्त की जा सकती है। मैं यहाँ आकर इनके वश में आ गई हूँ। इनकी विद्वता के सामने कौन वश में नहीं आ जाएगा? जिंदगी की सच्चाई को इतनी सहजता से हमारे अंदर उतारने की क्षमता इन बहनों के पास ही है। इनकी शक्तियों के सामने हम नत मस्तक हैं। डिग्रियाँ संस्कार के बिना किसी काम की नहीं हैं। संस्कार प्राप्त करने के लिए राजयोग एवं आध्यात्मिक शिक्षा की आवश्यकता है। यह शिक्षा हमें इन देवियों से प्राप्त होगी। अनुरोध है कि इस शिक्षा को अपना कर खुद को संस्कारित करें। असहाय एवं कमजोर महिलाओं की सुरक्षा के लिए सामने आएं। अभी नारियों का पूरा सशक्तिकरण नहीं हो पाया है। यह खेद की बात है।

अनेक सरकारी एवं गैर सरकारी कंपनियों की निदेशक बहन श्रीमती रंजना कुमार ने कहा कि प्राचीन काल से ही भारत की नारियाँ संगठन को सुदृढ़ करने की क्षमता से लैस थीं। महिलाएं अनेक कार्य एक समय में ही कर लेती हैं। उनमें यह क्षमता होती है। महिलाओं को जरूरी है कि वे प्रति दिन चेक करें कि उनके मन में व्यर्थ की कितनी बातें चल रही हैं। उन व्यर्थ की बातों से मुक्त होने पर उनमें काफी शक्ति आ जाएगी। शारीरिक शक्ति में भी वे किसी से कम नहीं हैं। उन्हें स्वयं को कभी भी कम करके नहीं आंकना चाहिए। जीवन में सफलता के लिए समायोजन की जरूरत होती है। इन नैतिक मूल्यों को अपनाने से हमारा जीवन सुखमय बन जाता है।

गुजरात सरकार महिला एवं बाल विकास प्रभाग की सचिव बहन अंजू शर्मा ने कहा कि महिलाओं पर आज अनेक जिम्मेवारी डाली जाती है। सभी जिम्मेवारियों को पूरा करना काफी कठिन कार्य है। अनेक सफल महिलाओं में एक साझा बात जो मैंने देखी वह यह कि उनमें से किसी में भी महिला होने की कोई हीनता नहीं थी। अपना सम्मान बनाये रखें। हमेशा। अन्य महिलाओं का सम्मान करना भी अवश्यक है। नारी नारी की दुश्मन है ऐसा क्यों कहा जाता है? यह एक सोचनीय बात है। ऐसा नहीं होना चाहिए। महिलाओं को आज अपना आर्थिक सशक्तिकरण एवं नेतृत्व क्षमता के विकास की काफी जरूरत है। लड़के एवं लड़कियों में

भेदभाव करना हमारे लिए उचित नहीं है। बेटों को भी महिलाओं का सम्मान करने की शिक्षा दी जानी चाहिए। संस्कारों का सिंचन आवश्यक है। मैं चाहूँगी कि मुझे अपना अगला जनम भी एक लड़की के रूप में ही मिले। महिला भ्रूण हत्या नहीं होने देंगे ऐसा हम सभी को संकल्प करना है।

मंच का संचालन ब्रह्माकुमारी डॉ सविता ने किया। अतिथियों का स्वागत मधुर गीत द्वारा किया गया। सद्भाव पूर्ण माहौल में सम्मेलन संपन्न हुआ।